भगवत् कृपा

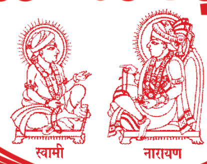

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम् को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥ (शिक्षापत्री, ११६)

वर्ष 31 अंक : 2	21.3.2008 शुक्रवार (मार्च – अप्रैल)	प्रति अंक : 10.00

॥ जय स्वामिनारायण ॥

निमंत्रण

अवसर आया है –

प्रगट स्वरूपों की सेरेछाया में

दिव्य जीवन जीने कृतनिश्चयी होकर

प.पू. गुरुजी के प्राकट्य दिन प्रार्थना करने का!

ईष्ट मित्रमंडल सहित सपरिवार आइए –

30 मार्च '08, रविवार सायं 5:00 बजे से एकत्रित होकर

प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी,

प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी और प.पू. साहेबजी

एवं

प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई की निश्रा में

प.पू. गुरुजी का 71 वाँ प्राकट्य दिन मनाएँ...

– इन्दु मल्कानी

(गुणातीत कुनबा, दिल्ली)

धन्य-धन्य काकाजी कृपा क्या बरसाई
हम सब भक्तों ने निराली भेंट पाई
साधु 'गुरुजी' जैसे देकर लॉटरी सबकी लगाई...

अपने आशीर्वचन में **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी** अकसर कहते हैं –

'कलियुग का प्रवाह जिस कदर से बह रहा है, उससे बचने का एकमात्र रास्ता है –
भगवान का आसरा और उसको अखंड धारे हुए पवित्र-निर्मल संत के साथ का हमारा अटूट संबंध...'

यूं, जीव को सुख-शांति प्राप्त करने के लिए प्रभु के अखंड धारक संत से संबंध होना अनिवार्य है ही और ऐसे प्रभुधारक संत के प्रागट्य का उत्सव तो चेतना पर लगे धब्बों को मिटाने का एक सेवायज्ञ है।

सो, धन्य-धन्य **१९३७ की १३ मार्च** का पावनकारी-मंगलकारी दिन, जब अज्ञानरूपी अंधकार एवं माया में लिप्त जीवों के जीवन में प्रकाश लाने सूर्योदय के समय ही प.पू. गुरुजी ने जन्म धरा! 'फागुन' के महीने में जन्म होना... मानो अपने आप में एक सांकेतिक घटना थी कि अनेक मुक्तों को प्रभु के रंग से रंगने ही धरती पर उनका प्रागट्य हुआ... **संसार की 'होली' को 'दीवाली' में परिवर्तित करने ही मानो प.पू. गुरुजी का प्रागट्य हुआ!**

१९५४ में गुरुवर्य योगीजी महाराज एवं गुरुहरि काकाजी महाराज के संबंध में प.पू. गुरुजी आए और... १९६१ में गुरुहरि योगीजी महाराज के वरद्हस्त उन्हीं की प्राकट्यतिथि के मंगलकारी अवसर पर श्रीजी लगातार ३० साल तक जहाँ रहे, उस प्रासादिक भूमि 'गढ़डा' में प.पू. गुरुजी ने भागवती दीक्षा ली और... १९६८ में प.पू. काकाजी ने प.पू. गुरुजी को दिल्ली भेजा। प.पू. गुरुजी ने तो प.पू. काकाजी महाराज के वचन में बुद्धि से परे का विश्वास रख कर मानो अंधेरे में छलाँग लगाई थी ही; पर, आर्षदृष्टा काकाजी महाराज ने उन्हें यूं दिल्ली भेज कर उत्तर के मुक्तों पर मानो कृपा बरसा दी!

आज प्रतीत होता है कि प.पू. काकाजी ने अपने युगकार्य में उन्हें शामिल कर दिया और इसी में जीवन की सार्थकता-परमपद मनवा दिया, जब... प.पू. गुरुजी ने निजी इच्छा, स्वमान व कीर्ति की महत्त्वाकांक्षा का विसर्जन करके केवल प.पू. काकाजी की मर्जी को ही टॉप प्रायॉरिटी पर रखा है। सांगोपांग प्रभु प्रगटाने की प.पू. गुरुजी की तीव्र अभीप्सा प.पू. काकाजी तक पहुँची, तो मानो एक **चैतन्यमाध्यम** का निर्माण हुआ और... उनके संबंध में आए हर एक को वे प्रभु की मूर्ति देते हो गए!

फलस्वरूप, दिल्ली में आने पर हर एक को आज सत्संग हरियाला लगता है-जीवंत लगता है। प.पू. गुरुजी ने गुणातीत अस्मिता तो प्रगटाई है ही; साथ ही प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी व पू. कांतिकाका की त्रिपुटी ने ताड़देव से जो कुटुंबभावना का प्रारंभ किया, उसी भावना को संजो कर इन्होंने दिल्ली के हरिभक्तों में आपसी आत्मबुद्धि व प्रीति की नींव रखी है। **'धाम, धामी और मुक्त सत्य हैं'**– यह बात बोलने में बड़ी मजेदार और आसान है। पर, प.पू. गुरुजी दिल की सच्चाई से प.पू. पप्पाजी के इस ब्रह्मसूत्र को लेकर जीते दिखाई पड़ते हैं। वाकई, प.पू. गुरुजी ने प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी जैसी दिव्य विभूतियों का दिव्यभाव से अद्‌भुत सेवन करके उनके अंतर की प्रसन्नता ली है। तभी तो, सभी को यहां अलग-सी आत्मीयता-अपनेपन का एहसास होता है। गुणातीत स्वरूपों के रूप में हमें जो भव्य प्राप्ति हुई है, उसकी महिमा हम सच में समझ पाएं, उसी के लिए ही प.पू. गुरुजी का दिन-रात का परिश्रम है।

सो, **१३ मार्च** ना केवल प.पू. गुरुजी का प्रागट्य

दिन है, बल्कि हम सभी की आध्यात्मिक प्रगति का स्रोत है। बच्चों की परीक्षा मार्च महीने के अंतिम दिनों तक चलती है। सो, बच्चे एवं उनके माँ-बाप बिना किसी भी रुकावट के इस उत्सव में दर्शन, सेवा एवं समागम का लाभ ले सकें, इस हेतु इसे हम मार्च के अंतिम रविवार के दिन मनाते हैं। सच में, ऐसे सत्पुरुष आज हमारे लिए कितने सस्ते व गरजु बने हैं कि वे हमारी व्यावहारिक सुविधा का भी इतना अधिक ध्यान रखते हैं। दरअसल **भक्तों के आनंद में ही प.पू. गुरुजी का आनंद समाया है।**

संबंध में आए चैतन्य को किस प्रकार प्रगट प्रभु की मूर्ति में जोड़ने की सेवा कर लूं, बस यही रहती है गुणातीतभाव को पाए संतों की जीवनभावना... तभी तो प.पू. गुरुजी का निःस्वार्थ प्रेम कलियुग के इस माहौल में संबंध में आए हुए के हृदय का परिवर्तन करता है। मुक्तों की चेतना को वे ऐसा स्पर्श करते हैं कि वो फिर उनकी मूर्ति भूला नहीं पाता...

❖ १७ फरवरी'८ को मंदिर के सामने रहते **प.भ. राजेश नरुलाजी** का जन्मदिन था। उसी दिन शाम को प.पू. गुरुजी कहीं पधरामनी में जाने वाले थे। राजेश भईया को भी वे अपने साथ वहाँ ले गए और वहाँ पर उनसे केक कटवाया। केक कटिंग करते समय प.भ. राजेशजी बोले–

'जनरल थिंकींग यह होती है कि जन्मदिन पर जिंदगी का एक साल कम हो गया; लेकिन प.पू. गुरुजी के मिलने के बाद हमारी तो जिंदगी बढ़ गई और सँवर गई!'

यूं प.पू. गुरुजी ने सभी के जीवन में कैसा स्थान लिया है कि छोटा हो या बड़ा-हर किसी को अपने जीवन में प.पू. गुरुजी के संबंध से प्रभु मिलन का एहसास होता है और निश्चिंतता बनी रहती है!

❖ प.भ. अनिलजी के सुपुत्र प.भ. दिव्यांग से सिनियर **डॉ. मोनिका**, उसके संपर्क से, मंदिर में प.पू. गुरुजी के दर्शन करने आती है। उसकी फॅमिली में ऐसा कुछ सत्संग भी नहीं है और उसे भी मंदिर आते हुए कुछ ज्यादा वक्त नहीं हुआ। परंतु प.पू. गुरुजी के दर्शन करने के बाद वो कहती है –

'पहले ऐसी चिंता रहती थी कि क्या रिज़ल्ट आएगा। अब ऐसी निश्चिंतता रहती है कि प.पू. गुरुजी जो करेंगे, मेरे हित में ही करेंगे।'

आज के युग में ऐसे पढ़ी-लिखी युवा के मन में ऐसा विश्वास बैठ जाना कि मेरे प्रभु जो करेंगे मेरे हित में ही करेंगे– यह अद्भुत बात ही नहीं, बल्कि संत में रहे प्रभु पल-पल हमारे हितैषी बने हैं उसका प्रमाण है।

❖ पिछले वर्ष अप्रैल में प.भ. एन.के.अग्रवालजी के संपर्क से **सौ. सविता भंडारीजी** का मंदिर आना हुआ। पूर्व के संस्कार ही होंगे कि वे इतने कम समय में खूब अपनेपन से मंदिर से जुड़ गईं हैं। उन्हें अपने पिताजी से खूब लगाव था, जिन्हें उन्होंने २००३ में स्थूल रूप से खो दिया; वो दोबारा मानो प.पू. गुरुजी के रूप उन्हें मिल गए हैं, ऐसा वे एहसास करती हैं। वे बताती हैं कि जब भी मैं मेरे पिताजी से मिलने जाती, तो वे जाने से पहले पूछते कि– ***'फेर कदों आएगी?'*** और ऐसे ही जब वे मंदिर से घर जाने की इज़ाज़त लेने सेवक से प.पू. गुरुजी को कहलवाती हैं, तो प.पू. गुरुजी पुछवाते हैं – ***'फिर वे कब आवेंगे?'*** तब सहज ही उन्हें अपने पिताजी के होने का एहसास होता है और... कहती हैं कि– ***गुरुजी सच में मेरे पिताजी हैं।***

बाह्यदृष्टि से प.पू. गुरुजी सामान्य जैसे ही दिखाई पडेंगे, पर वास्तव में उनके साथ प्रभु अखंड हैं; जो कि मुक्तों को उनका संबंध देकर उनमें अपनी मूर्ति स्थापित करते हैं, जबकि प.पू. गुरुजी तो प.पू. काकाजी के अभिप्राय की सेवा करते हुए संबंध में आए मुक्तों का व्यावहारिक व आध्यात्मिक जतन कर रहे होते हैं।

प.पू. गुरुजी तीव्र बुद्धिशाली तो हैं ही, लेकिन उनका जीवन करुणा, निःस्वार्थ-निर्व्याज-निष्काम प्रेम, दृढ़ता, माहात्म्यपूर्ण व आध्यात्मिक शिस्त का अद्भुत समन्वय है। इसी कारण प.पू. काकाजी का दूत बन कर वे अहंकाररहित वर्तते हैं। इससे भी अधिक प.पू. गुरुजी का जीवन खुल्ली किताब जैसा

है... सच में कमाल का जीवन जीकर उन्होंने हमारे लिए आदर्श रखा है... **उन्होंने उपदेश से नहीं बल्कि अपने ट्रांस्पेरन्ट व्यवहार से मुक्तों के दिल में स्थान लिया है।**

❖ एक बार सभा दौरान प.पू. गुरुजी ने अपना निम्न प्रसंग बताया था।

१९७४ में दिल्ली में कड़ाके की ठंड पड़ी थी... तो उन्होंने हीटर लेने पुछवाने के लिए प.पू. काकाजी को मुंबई फोन किया... तब ट्रंककॉल्स लगाने पड़ते थे। संजोगवश तीन बार ट्रंककॉल लगाने पर प.पू. काकाजी मिल पाए। प.पू. गुरुजी ने प.पू. काकाजी से पूछा कि –

काकाजी! यहाँ ठंड बहुत है, तो हम एक हीटर खरीद लें?

प.पू. काकाजी यह सुन कर हँस पड़े कि–

यह पूछने तूने तीन ट्रंककॉल्स करे!

इसी प्रकार जब तक प.पू. काकाजी स्थूल रूप से हाज़िर थे, तब तक प.पू. गुरुजी जब भी मुंबई जाते; तो दिल्ली मंदिर के लिए जरुरी सामान की लिस्ट वे प.पू. काकाजी को देते... जबकि मुंबई के कई हरिभक्त तो वैसे भी प.पू. गुरुजी को वे जो माँगें, वह अपने आप देने तैयार रहते। पर, प.पू. गुरुजी ने अपने जीवन में ऐसी शिस्त खूब दृढ़ रखी हुई है।

❖ प.पू. गुरुजी ने एक बार बताया था कि–

प.पू. काकाजी की हीरक जयंती निमित्त मुंबई में छप रही 'रियल इसॅन्स ऑफ तांत्र' की सेवा के दौरान एक बार मॅटर लेकर मौज प्रिंटिंग प्रेस में जाना था। रात को प.पू. काकाजी ने सूचना दी थी कि सुबह वहाँ जल्दी पहुँच जाना। नॉर्मली प्रेस पौने आठ को खुल जाती थी और प्रेस का मालिक 'श्री भागवत माधव' करीब आठ बजे प्रेस में आता था। सो, पौने आठ-आठ के बीच पहुँच जाने के लिए प.पू. गुरुजी सुबह तैयार होकर साढ़े सात बजे मूंग का नाश्ता करने बैठे ही थे कि तभी हॉल में से –

राजु , आप लोग गए कि नहीं? प्रेस में जाने निकल जाओ – यूं बोलते-बोलते प.पू. काकाजी चले आए और बीच वाली रूम की खिड़की के सरिए पकड़ कर वहाँ खड़े रहे। फिर बोले –

नाश्ता लौट कर करना, तुम लोग निकल जाओ; हमें उसके समय पर पहुँच जाना चाहिए।

यूं मूंग खाते हुए उठा कर हमें प्रेस में भेज दिया! और... जैसे ही हम प्रेस में पहुँचे, तो देखा कि 'श्री भागवत' प्रेस से बाहर निकल कर अपनी गाड़ी में बैठने ही जा रहे थे। हमें देखते ही वे बोले – चलो, आप आ गए तो अच्छा हुआ; वर्ना मैं पूना जाने निकल जाता और फिर सारा दिन मिलता नहीं।

तब समझ में आया कि प.पू. काकाजी ने इस प्रकार जल्दबाजी करके भेजा नहीं होता और रोज के मुताबिक आठ बजे पहुँचे होते, तो 'श्री भागवत' निकल जाते और उस दिन बुक प्रिंटिंग में नहीं जाती... एक दिन बिगड़ जाता।

हमें अनेक बार प.पू. गुरुजी के भी कई जेस्चर्स ऐसे लगते हैं कि वे बहुत जल्दबाजी करते रहते हैं... पर, **उनके प्रति यह हमारा हलाहल मायिकभाव है;** सो समझ नहीं पाते। लेकिन यदि आज्ञा पाली हो, तो उनकी पारमेश्वरी शक्ति-सत्ता का दर्शन हो ही जाता है।

ये प्रसंगें-बातें भले छोटे-से हैं, पर खूब अंतर्दृष्टि करा जाते हैं कि छोटी से छोटी चीज भी यदि 'गुरु' को पूछ कर या उनके कहे अनुसार करेंगे, तो हमारी साधना की पूर्णाहुति जल्दी होगी।

प.पू. गुरुजी की 'स्वरूपनिष्ठा' अपने आप में अजोड़ तो है ही, साथ ही **वे स्पष्ट वक्ता भी हैं और बुनियादी मुद्दों पर वे कभी समझौता नहीं करते।**

ऐसी निर्भीकता तो मानो उन्हें जन्म से मिली ही, पर निर्दोषता भी भरपूर है। **'अभयं सत्त्वशुद्धिः'** इनमें चरितार्थ दिखाई पड़ता है! हाल ही – जनवरी महीने में प.पू. आनंदी दीदी को प.पू. गुरुजी की युवावस्था के समय का एक प्रसंग बताते हुए **प.पू. दीदी** बोले कि–

गुरुजी निडर तो हैं ही, पर पहले से ही वे खूब निर्दोष भी हैं।

और... इस बात को प.पू. योगीबापा ने –

'तुम खूब निर्दोष' कह कर मानो पहले से एन्डॉर्स कर ही दी है।

उनका आंतरिक व बाह्य वर्तन समान है। प.पू. काकाजी के प्रति ही प.पू. गुरुजी की **'निष्ठा'** है, पर सभी प्रगट गुणातीत स्वरूपों के प्रति उन्हें समान रूप से पूज्यभाव है। और... प.पू. गुरुजी का यह भाव हर एक को तहे दिल से स्पर्श कर जाता है। साल की शुरुआत में ही **'ब्रह्मज्योति'** से **प.पू. अश्विनभाई** विदेश के मुक्तों के साथ दिल्ली मंदिर पधारे थे। तब सभा में बात करते हुए उन्होंने कहा था –

*...१९६६ के बाद जो कार्य काकाजी और पप्पाजी ने साथ में मिल कर किया – हमारे गुणातीत समाज की स्थापना; जिसमें अनुपम मिशन, गुणातीत ज्योत, योगी डिवाईन सोसाईटी इन नामों की हमारी जो अलग-अलग संस्थाएं हैं, उसके आद्य स्थापक और प्रवर्तक के रूप में यहाँ काकाजी और पप्पाजी की मूर्ति पधराई है। **हमारे गुणातीत समाज का शायद यह एक और पहला मंदिर है जहाँ इस प्रकार मूर्तियाँ पधराईं हैं** और इसका मूल कारण पू. गुरुजी हैं – शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज के लिए, काकाजी और पप्पाजी के लिए उनकी जो भक्ति है। यहाँ बैठ कर काकाजी ने जो स्वामिनारायण महामंत्र की अलख जगाई थी, वो काकाजी के आशीर्वाद से काकाजी के मानसपुत्र के रूप में गुरुजी ने यहाँ अखंड ज्योति ज्वलित रखी है... गुरुजी तो योगीजी महाराज की गोद में बड़े हुए, काकाजी-पप्पाजी की गोद में बड़े हुए और उनके गुणवारसे को धारते हो गए...*

प.पू. गुरुजी के इस समभाव को जानते हुए सभी स्वरूप उन पर हक रखते हैं। दूसरी ओर, कोई भी स्वरूप या किसी मुक्त से उन्हें कोई सूचन मिला हो या किसी को भी ऐसा कोई सूचन देते हुए उन्होंने सुना हो, उसे प.पू. गुरुजी ने अपने जीवन में अपना कर हम सब के लिए एक आदर्श स्थापित किया है।

वाकई, प.पू. गुरुजी ना केवल प.पू. काकाजी की मर्जी में रह कर जीते हैं, बल्कि संपूर्णतया उन्हीं में लयलीन रह कर हर एक मुक्त की उसी के लेवल पर रह कर निरंतर परवरिश कर रहे हैं...जो कि निम्न प्रसंगों द्वारा ख्याल आएगा।

❀ प.पू. काकाजी ने प.पू. गुरुजी को १९६८-६९ में दिल्ली आते हुए एक सूचना दी थी कि –

स्त्रियाँ खूब भावुक होती हैं। सो, कभी भी यदि कोई स्त्री भेंट या कुछ देना चाहे और वह यदि कुँवारी हो तो उसे कहलवाना कि अपने पिता या परिवार के मुखिया से पूछ कर और यदि शादीशुदा हो तो उसे कहलवाना कि अपने पति से पूछकर ही दे।

प.पू. गुरुजी ने प.पू. काकाजी की इस बात को आज भी सिद्धान्त बना कर रखा है। सौ. शोभना भाभी जैसी कई भाभियों-लड़कियों ने मंदिर में जरुरत पड़ने पर कई बार चुपके से कॅश या अपने ज़ेवर या एफ.डी. देने की भावना बताई, परंतु प.पू. गुरुजी ने प.पू. काकाजी की बात को याद रखते हुए उन्हें मना कर दिया है। आज भी जब कोई यूं सेवा देती है, तो प.पू. गुरुजी उसे पूछवाते हैं कि पापा से पूछ लिया-आपके पति से पूछा? छोटे से व्यवहारिक सूचन के प्रति कैसी चौकसी?

❀ अभी-अभी ३ फरवरी को सत्संग के ही दो आत्मीय परिवारों के बीच में रिश्तेदारी हुई... इस विवाह की एक विशेषता यह थी कि दोनों पक्ष का एक ही सांझा कार्ड था और कार्ड में रिश्तेदारों से ज्यादा हरिभक्तों के नाम थे। जब यह कार्ड तैयार हो रहा था, तब प.पू. गुरुजी खुद खूब दिलचस्पी से करीब एक सप्ताह तक – कार्ड व कार्ड का मेटर फाईनल होने तक परिश्रम करते रहे। कार्ड की डिज़ाईन, मॅटर, प्रुफ रीडिंग तक हर काम खुद करते। प.पू. गुरुजी का यह परिश्रम देखकर सभी दंग थे। आख़िरकार कईयों ने तो कहा भी था कि गुरुजी! अपना यह सिस्टम नया, अच्छा और अनुकरणीय है कि लड़के और लड़की वालों का एक ही सांझा कार्ड! तब **इस तारीफ़ का-यश का सेहरा अपने सिर बांध लेने की बजाय,** सालों पहले का पू. कांतिकाका के सुपुत्र प.भ. घनश्यामभाई व सौ.

ईला भाभी की शादी का कार्ड मंगवा कर सबको दिखाते हुए **प.पू. गुरुजी बोले कि –**

इसे पढ़ो! यह सिस्टम नया नहीं है; सत्संग में ऐसे रिश्ते और रस्मों से कुटुंबभाव की शुरुआत प.पू. काकाजी और प.पू. पप्पाजी ने करी थी।

उस कार्ड में 'इन्वीटेशन' प.पू. पप्पाजी की ओर से था; प्रेषक की जगह पर 'गुणातीत ज्योत' लिखा था और दर्शनाभिलाषियों में भी सभी सत्संगीयों के नाम लिखे थे। इस प्रसंग से एक ओर भक्तों के प्रति की निराली आत्मीयता का दर्शन तो हुआ ही, लेकिन प.पू. गुरुजी ने सेवकभाव से प.पू. काकाजी व प.पू. पप्पाजी के सिद्धान्तों को पल-पल नज़र में रख कर दृढ़ता से उसी जीवनशैली को जो अपनाया है, वह दर्शन भी हो रहा है।

सच में, प.पू. गुरुजी के रूप में प.पू. काकाजी ने हमें अपना ही नूर प्रगटा कर अनमोल भेंट दी है।

❀ पिछले साल सवद्दी के **प.भ. सुरेश बंसलजी** लम्बी बीमारी के बाद अक्षरनिवासी हो गए। अगली रात को इनकी धर्मपत्नी पू. शरण भाभी ने अस्पताल में प.पू. गुरुजी को सुरेश भईया के रूम में जाते देखा। उन्हें ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के प्रति खूब निष्ठा थी। सो, ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज ने मानो उन्हें यह संकेत दिया हो कि इसे पीड़ा से मुक्ति दिलाने और अपने साथ ले जाने मैं ही आया हूँ! **भगवान स्वामिनारायण का अभय वरदान भी तो है ही कि अंत समय में मैं अपने आश्रित को लेने आऊँगा!**

❀ सत्संग में आने से पूर्व **प.भ. राकेशभाई शाह** की श्रद्धा 'श्री राम' के स्वरूप में थी। वे अधिकतर भजन भी 'श्री राम' के गाया करते थे और 'स्वामिनारायण' मंत्र की धुन के दौरान मन में 'सीता-राम' का जाप किया करते थे। उन्हें प.पू. गुरुजी ने कभी भी ऐसा आग्रह नहीं करा कि वे 'स्वामिनारायण' को मानें या 'स्वामिनारायण' मंत्र का उच्चारण किया करें। पर, वे खुद ही असमंजस में रहा करते थे कि वे 'रामजी' का भजन करें या 'स्वामिनारायण' का? एक बार प.पू. गुरुजी ने सुबह की सभा में 'स्वामिनारायण' मंत्र की गहनता समझाते कहा कि – प्रगट स्वरूपों की परंपरा जो चलती आई है, उसके कारण इस मंत्र की पोटेन्शियालिटी खूब अधिक है। और... यह बात करते हुए खास प.भ. राकेशभाई का नाम लेते हुए प.पू. गुरुजी बोले कि– *'राकेश, मैं तुम्हें इस बात की गारंटी देता हूँ। कहो तो विज़िटिंग कार्ड पर अपने सिग्नेचर करके दूँ...'* सो, प.पू. गुरुजी ने मंदिर के विज़िटिंग कार्ड पर सिग्नेचर करके दिए, जिसके पीछे लिखा था – **'लिविंग मंत्र स्वामिनारायण'।** यूं, प.भ. राकेशभाई को उनके प्रश्न का उत्तर देते हुए 'स्वामिनारायण' मंत्र का भजन करने का इन्डीकेशन प.पू. गुरुजी में विराजमान अंतर्यामी स्वरूप ने दे दिया!

❀ जगराँव के प.भ.अशोक शर्माजी की लड़की **कु. रुचिका** की शादी सौ. शोभना भाभी के लड़के प्रणव के साथ हुई है। सौ. रुचिका को प.पू. गुरुजी के प्रति अत्यधिक लगाव है... सो, सौ. रुचिका की विदाई के लिए प.पू. गुरुजी ने अपनी गाड़ी 'प्रसादी' को फूलों से सजवाने सेवकों को कहा था। इस बात से सभी आश्चर्य में थे; पर बाद में पता चला कि कु. रुचिका के मन में पहले एक विचार झबुका था कि मेरी शादी चाहे कहीं भी हो, पर मेरी विदाई प.पू. गुरुजी की गाड़ी में हो। सौ. रुचिका भी पहले तो वह गाड़ी सजी हुई देखकर ताज्जुब रह गई, क्योंकि अपने मन की यह बात उसने कभी किसी को बताई ही नहीं थी। **प.पू. गुरुजी के भक्तवात्सल्य एवं अंतर्यामी स्वरूप का यह दर्शन था!**

मुक्तों को राजी करने नित नई उमंग-उत्साह :

गुणातीत ज्योत के **पू. मनी बहन** तो कई बार हँसी-मज़ाक में कहते हैं कि दिल्ली से गुज़र के कहीं जाना-करना हो, तो डर के मारे हम चुपके से निकल जाना पसंद करेंगे; क्योंकि दिल्ली यानि–मूर्ति लूटने वाले का प्रदेश! मूर्ति लूटने का हाथ आया एक भी मौका प.पू. गुरुजी कभी नहीं छोड़ते...

❀ 'प.भ. एन. के. अग्रवालजी के पोते **'रुद्राक्ष'** को

खीरे-टमाटर खूब पसंद हैं'– यह बात किसी ने प.पू. गुरुजी को बताई थी। तब से जब भी वह मंदिर आता है, हर बार प.पू. गुरुजी उसे खीरा और टमाटर अचूक देते हैं। १३ सितंबर को प.पू. गुरुजी के क्वॉर्टली बर्थ-डे के साथ उसका भी जन्मदिन आता है। प.पू. गुरुजी ने उसकी इस छोटी-सी पसंद को ध्यान में रखकर उसके लिए खीरे और टमाटरों से भरी टोकरी बनवाई और उसे गिफ्ट पैक करवा कर उसे दी। यूं छोटे बच्चे की पसंद को भी प.पू. गुरुजी हमेशा याद रखते हैं और उसके आने पर या ऐसे मौके पर उसे वह चीज़ देते हैं या बनवाते हैं। यह है उनका निराला वात्सल्य और मूर्ति लूट लेने की निराली अदा!

❀ प.भ. नवीनभाई शाह का पौत्र **'नक्षत्र'** तो मानो प.पू. गुरुजी का खास, चहेता व 'इकलौता' लगता है। उसे देखते ही प.पू. गुरुजी का चेहरा मानो बदल ही जाता है। यह देख कर 'महबूब' की हर चीज 'महबूब' होती है या व्हालाना 'व्हाला' लागे 'व्हाला' सहुने इस न्याय से हर एक के लिए भी वह एक 'आकर्षण' बन गया है। वह एक महीने का भी नहीं हुआ था कि प.पू. गुरुजी ने उसे रोज महापूजा में ले आने को कहा। प.पू. गुरुजी की भावना ऐसी कि शुरुआत से ही महापूजा के शब्द-मंत्र-माहौल उसके भीतर 'संस्कार' डालेगा। प.पू. गुरुजी उसे कान में कहते भी कि–

आपणे भगवानना छीए, मायाना नथी (हम भगवान के हैं, माया के नहीं हैं)!

हम सोचेंगे कि ये एक महीने के बच्चे को तो क्या पता चलेगा? लेकिन प.पू. गुरुजी ने 'स्वामी की बात' पढ़वाते हुए कहा था कि– ***शब्द की देह बनती है!*** किसी से प.पू. गुरुजी को ज़रा भी पता चले कि आज सीढ़ियों की रेलिंग पर फिसलते हुए नक्षत्र खूब खुश हो रहा था या वह मोबाईल देख कर खूब खुश हो रहा था। तो, तुरंत किसी को बाजार भेज कर उसके लिए वैसा स्लाईडर या खिलौना मंगवा देंगे। यह देख कर हम कई बार सोच में पड़ जाते हैं कि एक वर्ष के बच्चे को भला क्या पता चलता होगा? लेकिन, प.पू. गुरुजी उस बच्चे की ख़ुशी से बेहद ख़ुश हो जाते हैं ही और नक्षत्र को भी प.पू. गुरुजी से खूब अपनापन लगता है। **इसी अपनेपन के कारण वह प.पू. गुरुजी में डूबा रहेगा!**

❀ एक बार मंदिर में ड्रमस्टीक की सब्जी बनी थी। **पू. मल्कानी अंकल** को वह पसंद आई। अगले दिन सुबह फोन पर उन्होंने प.पू. गुरुजी को सहज ही कहा कि गुरुजी, ड्रमस्टीक सेहत के लिए बहुत अच्छी रहती है; कोई गुजरात से आए करे तो मेरे लिए मंगा लेना। प.पू. गुरुजी ने फोन पूरा होते ही रसोई में पूछवाया कि सरगवा की सींग है?

पू. सुहृद्स्वामी ने बताया कि– 'हैं'।

प.पू. गुरुजी ने तुरंत पू. ओमप्रकाशजी के साथ पू. मल्कानी अंकल के घर वह भिजवा दीं। **पू. मल्कानी अंकल** भी ताज्जुब रह गए और फोन किया कि–

'गुरुजी! रियली यू आर वेरी अपीलिंग!'

प.पू. गुरुजी ने तब सेवकों को समझाते हुए कहा - ***'हम कठिन साधना करके भगवान की मूर्ति सिद्ध तो कर नहीं सकते, पर ऐसे निष्ठा वाले भक्तों की यूं ऐन मौके की सेवा कर लें, तो उनके हृदय में जो भगवान की मूर्ति होती है, वो हमें मिल जाती है। पर आलस छोड़ कर ऐसे तुरंत करें तो; हम सोचें कि– 'बाद में भेज देंगे'...ऐसे नहीं।'***

यहाँ हमें एक बात समझनी पड़े कि पू. काकाजी द्वारा बताई इस **'करामत'** पर गुरुजी को यकीन होगा और इससे भी अधिक –'मुक्तों के दिल में प्रगट प्रभु की मूर्ति रहती है'–इस **तथ्य** में प.पू. गुरुजी को आस्तिकभाव होगा–तब ही वे यह उद्यम करते होंगे ना?

❀ **प.भ. ओ.पी.अग्रवालजी** अपने परिवार के साथ बेटी की शादी निमित्त २५ जनवरी को 'राजधानी' से दिल्ली आ रहे थे। उस दिन दिल्ली में ठंड भी बहुत थी... पर तब भी प.पू. गुरुजी उन्हें रिसीव करने सुबह ८:३० बजे नई दिल्ली स्टेशन पहुँच गए!

'भगवान और भगवान के भक्त सत्य' और उन्हें राजी

करने ही पल-पल की क्रिया! जगत मेरे बारे क्या कहेगा, क्या सोचेगा, किसी को कैसा लगेगा – इस बारे उन्होंने कभी परवाह नहीं रखी। यूँ, प.पू. गुरुजी ऐसे प्रसंगों द्वारा महिमा से भक्तों की सेवा करने की सेवकों को सूझ देते रहते हैं। साथ-साथ यह भी ख्याल पड़ता है कि गुरुजी ने प.पू. काकाजी-प.पू. पप्पाजी के जीवन को वाकई निहारा है! समय समय पर किए गए प.पू. गुरुजी के ऐसे परिश्रम का ऋण कैसे चुका पाएंगे?

तुझको राजी करने हर क्रिया हो हमारी –
संबंध में आए मुक्तों के जीवन में प.पू. गुरुजी ने आज कैसा स्थान लिया है, उसका भी निम्न प्रसंगों से दर्शन होता है...

❁ **प.भ. पुरी अंकल** को जनवरी '०७ में रिटायर्मेन्ट मिली। प.पू. गुरुजी ने उन्हें रिटायर्मेन्ट के दूसरे दिन से ही मंदिर में ऑफिस का काम संभालने की आज्ञा करी। प.भ. पुरी अंकल दूसरे दिन से ही ठीक नौ बजे मंदिर पहुँच जाते हैं। कुछ समय बाद उनको एस.बी.आई से एड्वाईझरी जॉब की ऑफर आई। प.भ. पुरी अंकल के सभी कलीग्स के ऑफिस से फोन भी आने लगे थे कि – *कब से ऑफिस आना शुरु करोगे?* लेकिन प.भ. पुरी अंकल ने प.पू. गुरुजी को कहा कि –

'गुरुजी! बड़ी मुश्किल से तो मंदिर की यह सेवा मिली है और मेरा मन भी लगा है, तो फिर क्यों दोबारा जॉइन करना? सिर्फ पैसा ही थोड़े सब कुछ है!'

प.भ. पुरी अंकल की इस बात को सुनकर प.पू. गुरुजी खूब राजी हुए और बोले कि –

'यह मोस्ट क्रैडिटेबल बात है। हम सिर्फ कहा करें कि हमें तो पहले सत्संग, फिर सब कुछ...उसका कोई अर्थ नहीं। महाराज ऐसा कुछ फैंकते ही हैं– यह देखने के लिए कि तुम इरादे के कितने पक्के हो। दूसरी ओर, ऐसी महिमा से हम यहाँ सेवा करेंगे, तो महाराज तो देने के लिए ही बैठे हैं।'

थोड़े समय में ही प.भ. पुरी अंकल के बेटे आशीष को जॉब में ऐसी जंप मिली जो इतनी छोटी उम्र में कभी किसी को नहीं मिलती। प.पू.गुरुजी भी तब बोले थे – *'महाराज ने आऊट ऑफ धी वे जाकर काम करा है। हम अगर गाय खरीदते हैं, तो गाय के साथ उसकी आऊ में रही इतड़ी आ ही जाती है। उसकी कोई अलग कीमत नहीं देनी पड़ती। यूँ अगर सत्संग करेंगे तो लक्ष्मी तो नारायण के पीछे - पीछे अपने आप आएगी।'*

❁ प.भ. राजकुमार गोयलजी के सुपुत्र **मनीष (हीरो)** के लिए कहीं से रिश्ता आया था। उसके मम्मी-पापा ने उससे सहज ही पूछा कि क्या करना है? हीरो ने तुरंत मना कर दिया कि मुझे नहीं करना, मैं तो वहीं शादी करूँगा जहाँ प.पू. गुरुजी कहेंगे।

यह बात प.पू. गुरुजी को पता चली। प.पू. गुरुजी ने हीरो से पूछा कि – *तू शादी कब करेगा?*

उसने प.पू. गुरुजी को कहा कि – *जब आप कहोगे।*

प.पू. गुरुजी ने पूछा कि – *कल कर दें तेरी सगाई?*

उसने 'हाँ' भर दी, जबकि उससे लड़की का कोई जिक्र भी नहीं हुआ था कि लड़की कौन है।

फिर, उसी दिन शाम को प.पू. गुरुजी ने उसे बुलाने घर पर फोन करा। जब प.पू. गुरुजी ने फोन करा तो हीरो ने बताया कि –

मम्मी-पापा घर पर नहीं हैं, रेवाड़ी गए हुए हैं।

तो, प.पू. गुरुजी ने उसे घर पर ताला लगाकर आने को कहा। मंदिर आने पर प.पू. गुरुजी ने उससे पूछा कि –

सचमुच तेरी शादी पक्की कर दें?

उसने बोला– *जैसा आप ठीक समझो गुरुजी।*

उसने तब भी प.पू. गुरुजी से लड़की के बारे नहीं पूछा कि लड़की कौन है।

इसी तरह प.भ. सतीश शर्माजी व मालती भाभी की सुपुत्री **'मंज़िल'** (जिसका शादी से पहले नाम 'निकिता' था) को भी प.पू. गुरुजी ने प.पू. दीदी से कहलवाया कि कल एक सगाई है तू अभी मंदिर आ जा। वह उस वक्त बच्चों को ट्यूशन दे रही थी; वह बीच में ही छोड़ कर मंदिर आई और उसने पूछा– *किसकी सगाई है?*

तो प.पू. गुरुजी ने कहलवाया – *तेरी!*

वह एकदम आवाक् रह गई। पर, फिर प.पू. गुरुजी के पूछवाने पर उसने भी 'हाँ' करी।

प.भ. राजकुमारजी व उनकी धर्मपत्नी सौ. गीतांजली भाभी अपनी बेटी के ससुराल रेवाड़ी गए हुए थे। उनको फोन पर ही पूछा कि ऐसे कल सगाई रख लें? उन्होंने भी प.पू. गुरुजी को तुरंत 'हाँ' कर दी। और...

प.भ. राजकुमारजी ने अपनी बहन को फोन पर बताया कि कल मनीष की सगाई है; तो वह थोड़ी नाराज़ जैसी होने लगी कि इतना कम टाईम है वगैरह। **पू. राजकुमार गोयलजी** ने उन्हें तुरंत जवाब दिया कि–

देख! मैं भी अभी रेवाड़ी में हूँ। कल अगर मैं भी नहीं पहुँच पाया, तो भी सगाई तो होगी ही। सो, तुम्हें जैसे करना हो वैसे कर लेना।

उन्हें प.पू. गुरुजी का कितना भरोसा होगा कि उन्होंने प.पू. गुरुजी को बिना कुछ पूछे, बिना कुछ सोचे समझे, तुरंत हाँ कर दी!

अगले दिन सभी सगाई के लिए मंदिर में ही इकट्ठे हुए। उनके कुछ रिश्तेदार भी थे व सत्संगी भी थे। प.पू. गुरुजी ने सगाई की विधि समाप्त होने के बाद कहा कि–

मेरा एक सजैशन है, अगर आप लोग मानो तो। दो दिन के बाद शादी रखेंगे तब भी आप लोग ही आने वाले हो। इससे अच्छा है कि आज ही शादी क्यों न कर दें?

लड़की व लड़के के माँ-बाप इस बात पर भी सहमत हुए। और... उसी दिन दो घंटे के अंतराल पर उनकी शादी की सभी तैयारियाँ हो गईं। घोड़ी, ढ़ोल, लड़के की शेरवानी, लड़की का लहंगा, इन सभी का बंदोबस्त हरिभक्तों ने मिलकर किया। शाम के छः बजे तक में यह शादी भी हो गई थी! **'चट् मंगनी, पट् ब्याह'** की बात सिर्फ सुनी थी, पर यहाँ तो साकार देखी!

शादी के दौरान सभी सत्संगीयों के चेहरे पर अलग ही उत्साह था, जैसे कि अपने घर की ही शादी हो। एक ओर प.पू. गुरुजी द्वारा प्रगटाई कुटुंबभावना का दर्शन हो रहा था और दूसरी ओर भगवान और संत को राजी करने की भावना से उनके वचन से जीने वाले समाज का!

❀ प.भ. पुरी साहब के सुपुत्र **चि. आशिष** का विवाह मुंबई के प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी की सुपुत्री **कु. प्रियंका** के साथ तीन फरवरी-प.पू. काकाजी के साक्षात्कार दिन पर मंदिर के ही प्रांगण में होना निश्चित हुआ। ये दोनों ही सत्संग को अपना परिवार, नात-जात-बिरादरी मानकर जीने वाले खूब निजी व आत्मीय परिवार हैं। पर, आश्चर्य यह था कि कु. प्रियंका ने आशिष को यूं देखा तक नहीं था और ना ही उसे ख्याल आता था कि यह कौन-सा लड़का है। इससे भी अधिक मुंबई में वो कंपनी सॅक्रेटरी की अच्छी जॉब पर थी। पर, वह भी एक ओर रख कर प.पू. दीदी के वचन से यह विवाह करने हाँ कर दी। और... यह भी इसलिए संभव हुआ है कि **दिल्ली मंदिर से जो भी जुड़ता है, वह पूरा का पूरा परिवार ही मंदिर व प.पू. गुरुजी से जुड़ जाता है।** यह भी प.पू. काकाजी का एक आशीर्वाद ही कहा जाए!

तेरी कृपा से टले जन्मों की कसर हमारी :

❀ सालों पहले अमदावाद से **प.भ.दिलीपभाई ठक्कर** दिल्ली आए थे। वे प्रॉफ़ॅशनल फोटोग्राफर हैं और फोटोग्राफी खूब अच्छी करते हैं। उन्होंने अलग-अलग पोज़ में प.पू. गुरुजी के फोटो खींचने की इच्छा ज़ाहिर करी। प.पू. गुरुजी ने एक-दो बार अनिच्छा बताई, परंतु उनकी भावना देख कर प.पू. गुरुजी मना नहीं कर पाए। पर, उन्होंने जब रोल धुलवाया तो पूरा ब्लैंक आया! प.भ. दिलीपभाई यह देखकर खूब आश्चर्य में पड़ गए। फिर उनको भीतर में यह एहसास हुआ कि प.पू. गुरुजी कोई ऑर्डीनरी साधु नहीं हैं। दूसरी बार प.पू. गुरुजी से विनंती करके फिर से उनकी फोटो खींची, तो वह सारे फोटो मानो उनकी कृपा से खूब अच्छे आए।

असल में हम में कोई स्किल हो, तो उसकी एक

कॉन्सियसनेस बनी रहती है। पर, इस प्रसंग से स्पष्ट है कि – भीतर में भगवान को प्रगटाए हुए **सच्चे साधु हमें 'हमारी कॉन्सियसनेस' में झूलने नहीं देते।** हम में जो कुछ भी है, वह प्रभु का दिया हुआ ही है और हम से प्रभु ही अपने बल से सब कुछ करवा लेते हैं- इस बात का वो एहसास करवाते रहते हैं।

❀ **पू.राकेशभाई** एक बार शाम को भजन गा रहे थे। उसमें एक पंक्ति आई -

'विलीनभावे विभुपणानुं कार्य ना जाणे कोई...'।

प.पू. गुरुजी अनेक बार गुजराती भजनों की पंक्ति की हिन्दी करके समझाते हैं। यूं इस पंक्ति का अर्थ समझाते हुए बोले कि –

भगवान रखे संत बिल्कुल विलीन होकर हमारे 'लेवल' पर आकर दासभाव से जीते हैं। स्वरूप अपना सारा वैभव छुपाकर बिल्कुल सामान्य ढंग से वर्तते हैं। सो ही – किसी को उनके कार्य का ख्याल ही नहीं पड़ता। पर, प्रभु प्रगटाने खुद को विलीन करना ही पड़े।

प.पू. गुरुजी की बात सुन कर मंदिर में बैठे हुए सभी दंग रह गए कि प.पू. गुरुजी तभी इतना सहज वर्तते हैं और हमें एहसास ही नहीं होने देते कि प्रभु इनमें रहे हुए हैं।

❀ गुजरात एपार्टमेन्ट्स के **सौ. दीप्ति भाभी** ने अपने घर में प.पू. गुरुजी की मूर्ति लगाई थी। शाम को मंदिर आकर वो प.पू. दीदी से बात कर रहे थे कि मूर्ति लगाने से घर एकदम भरा-भरा लग रहा है - रौनक लग रही है। तब प.पू. दीदी ने समझाया कि –

अगर यह मूर्ति दिल में रख लो तो अंदर कितनी रौनक - रौनक हो जाए!

प.पू. दीदी ने एक ही वाक्य में मानो सत्संग का पूरा मर्म समझा दिया।

❀ कभी-कभी भक्तों के लिए मंदिर की गाड़ियों या प्रसाद इत्यादि की अत्यधिक सुविधा करवाते देख कर सेवकों के मन में उठते प्राकृत विचारों की कशमकश का एक बार प.पू. गुरुजी ने जवाब दिया था। उन्होंने बताया था कि – हम जब प.पू. काकाजी की आज्ञा से दिल्ली आए थे तब हमारे पास दो ट्रंक में सामान था। लोहे के वे दो ट्रंक प.पू. गुरुजी ने आज भी संभाल कर रखवाए हुए हैं कि हमें याद रहे कि हमारे पास तो सिर्फ इतना सामान था। अब जो कुछ भी यहां है – 'संतों - हरिभक्तों का साझा है' और... वे ट्रंक प.पू. गुरुजी ने एक बार सभा में मंगवा कर सबको दिखाए भी। तो सभी आश्चर्य में रह गए कि – प.पू. गुरुजी कैसे अखंड जाग्रत रहते हैं?

❀ अभी- अभी **पू. मल्कानी अंकल** प.पू. गुरुजी के साथ **'काशी विश्वनाथ'** के दर्शन करने बनारस गए थे। इसी दौरान पू.कौशिकभाई जानी का दिल्ली में ऍक्सिडॅन्ट हो गया और उनके हिप पर गहरी चोट आई। पू. मल्कानी अंकल को बनारस से वापिस आते हुए प्लेन में प.पू. गुरुजी से यह पता चला। **खूब थके हुए होने के बावजूद वे रात को ही पू.कौशिकभाई को देखने एयरपोर्ट से सीधा हॉस्पिटल गए!**

प.पू. गुरुजी यह बात सुनकर खूब राजी हो गए। **भक्तों में आपस - आपस में ऐसी आत्मीयता डॅवेलप हो, उसी के लिए तो प.पू. गुरुजी का दिन रात का परिश्रम है। प.पू. गुरुजी तो कहते हैं –**

भक्तों में जितना कुटुंबभाव बढ़ा, वह 'सत्संग बढ़ा' कहा जाए!

ऐसे प.पू. गुरुजी के पास कोई राजनीति या शॅयर बाज़ार की बात करने आए या बच्चे चुटकुले सुनाने आएं – उन हर एक के साथ प.पू. गुरुजी रसबस दिखाई देते हैं। कोई व्यापार की समस्या लेकर आया हो या कोई घर के झगड़े की बात लेकर आए हों या पति-पत्नी के आपस के मनमुटाव की बात लेकर आए हों, तो प.पू. गुरुजी हर एक को हल देकर फ्रेश करके ही भेजते हैं।

सो, प.पू. गुरुजी के – कुटुंबभाव के इस अभिप्राय में जुड़ कर उनकी दिव्य स्मृतियों में निरंतर रहते हुए 'रात्रि प्रार्थना' की निम्न पंक्तियों को केवल गाने तक सीमित ना रख कर जीव में बसा लें – ऐसी प्रार्थना!

'मोंघामूली मूर्ति तें सस्ती कीधी, रुड़ां प्रारब्ध माटे तें सेवा दीधी
जाग्रत, सुषुप्ति, स्वप्न मांही, तारा थई रहीए ओ दयानिधि...'

❑

गुणातीत समाज की 'होली' व 'धुलेन्डी' यानि 'अनादि महामुक्त भगतजी महाराज' एवं 'अनुपम के आधार व सभी के प्यारे साहेबजी' का प्राकट्योत्सव!

२१ मार्च, होली – 'होली' का महत्त्व यह है कि भगवान श्रीकृष्ण द्वारा गीता में दिए अभयदान – '*मेरे भक्त का नाश नहीं होगा*' – का बालभक्त प्रह्लादजी ने आज के दिन साक्षात्कार किया था। मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी का दिव्यभाव से अद्भुत सेवन करके गुणातीतभाव में निरंतर रह कर श्रीजी महाराज को-अखंड धारण किए **अनादि महामुक्त भगतजी महाराज** के प्रागट्य का भी यह मंगलकारी दिन! **'निजात्मानं ब्रह्मरूपम्'** के तात्पर्य को अ.म.मु. भगतजी महाराज समझे और 'गुणातीत' में खो गए... दो सौ बासठ वचनामृतों में प्रबोधित ज्ञान और रहस्यों को आत्मसात् करके उन्होंने परम भागवत् संत की परम एकांतिकी स्थिति प्राप्त करी। गृही होते हुए भी त्यागी साधु जैसा जीवन जीकर वे सभी के आदर्श बने; इतना ही नहीं, गुणातीत के वारिसदार बने! जड़ व चेतन-सभी में स्वामिनारायण के संबंध को ही मान्यता देना इन्होंने अपने जीवन द्वारा सिखाया।

निष्काम कर्मयोग को इन्होंने जीवन में अपनाया था। रजाई सिलते हों, कपड़े को टांका लगाते हों या कपड़े सीते हों, लेकिन हृदय में २४ घंटे प्रगट प्रभु की मूर्ति अखंड रख कर वे कार्य करते।

एक बार कोठारी बेचर भक्त ने भगतजी महाराज से अपना कुर्ता सिलवाया। बिना माप लिए ही वह कुर्ता भगतजी महाराज ने सिला। कोठारी ने जब वह पहना तो एकदम ठीक माप का था! भगतजी महाराज पर कोठारी राजी हो गए। तब भगतजी महाराज परभाव में बोले कि –

'कोठारी महाराज! यह तो देह का कुर्ता सिला है; महाराज की कृपा से हमें तो आत्मा का कुर्ता सिलना भी आता है।'

और... तब से कोठारी बेचर भक्त भगतजी महाराज का समागम करने लगे।

प्रभु के ऐसे कल्याणकारी गुण प्राप्त करके दासत्वभाव से जीकर वे सभी के लिए आदर्श बने हैं। उन्हें वड़ताल मंदिर से बाहर निकाल दिया, तो भी वे मंदिर के बाहर बैठे रहते और साधु 'गोमती' तालाब पर नहाने-करने जाते तब प्रणामपूर्वक 'जय स्वामिनारायण' कहते। वे उनका तिरस्कार करते रहते, लेकिन उनके मुँह पर कोई फर्क नहीं पड़ता। इतना ही नहीं; इन संतों की वापसी के समय वे फिर उसी भाव से उन्हें 'जय स्वामिनारायण' कहते! यूं स्वामिनारायण के संबंधवालों का इन्हें असाधारण माहात्म्य था।

ऐसे गुणातीत पुरुष हम पर कृपा करके यूं एक आदर्श स्थापित करते हैं कि भले कैसे ही हों, लेकिन हमें तो उनका संबंध किससे है, वो ही देखा करना है। वृत्ति के वेग में भक्तों द्वारा जाने-अनजाने की गई बदसलूकी की मन में गाँठ बांधे बिना बस अहोहोभाव से उनकी सेवा कर लेनी है।

तो, उनकी जयंती पर ऐसा वर्तने उनसे व प्रत्यक्ष स्वरूपों से बल माँगे और केवल महाराज की मूर्ति के सिवा जैसे उन्होंने और कुछ प्यारा ही नहीं रखा ऐसी जीवनशैली बनाने हम तत्पर हों...

२२ मार्च धुलेन्डी – वृक्ष की डाली का अंतिम पत्ता गिरे और नए कोमल पत्ते फूटें यूं – वसंत का महीना मध्य में पहुँचा कि जगत के चक्करों से मुक्त करने एक दिव्यतेजराशि मानवरूप में साधुता का केसरिया

रंग ले चुकी थी। वो और कोई नहीं, पूर्व के मुक्त **प.पू. साहेब!** पूर्व के मुक्त के रूप में वे पधारे, पर प्रभु का स्वरूप बन कर आज एक अनुपम चैतन्यनाविक बने हैं। मानो गुरुहरि योगीजी महाराज का कार्य करने ही उनका प्रागट्य हुआ! गुरुहरि योगीजी महाराज से उनका संबंध हुआ और... प्रथम दर्शन से ही उनका अंतर जाग्रत हो गया। इसी कारण भक्तिपूर्ण हृदय से समर्पित होने में उन्हें समय नहीं लगा। मन-बुद्धि से परे की चैतन्य भूमिका में रह कर उन्होंने बापा का दिव्यभाव से सेवन कर लिया।

केवल गुरुहरि योगीजी महाराज और उनकी आज्ञा की ओर ही दृष्टि रख कर प.पू. साहेब ने सत्संग के जो-जो कार्य किए वे सभी **प.पू. काकाजी एवं प.पू. पप्पाजी जैसे गुणातीतस्वरूप उनके आधार व पथप्रदर्शक बने, तो वह *'निष्काम कर्मयोग'* बन गया!** गुरुहरि योगीजी महाराज की आज्ञा को तनिक भी नज़रअंदाज़ ना करते हुए उन्होंने संपूर्ण शरणागति का रवैया अपनाया था, तो २५ वर्ष की छोटी आयु में ही वे स्वयं निष्काम कर्मयोगियों के एक समूह के पथप्रदर्शक बने। और... तभी तो गुरुहरि योगीजी महाराज ने **'हमारे जसभाई साहेब!'** जैसी उपाधि देकर सत्संग समाज के समक्ष अपने अद्भुत सर्जन का दर्शन कराया। और... गुरुहरि योगीजी महाराज द्वारा सर्जित 'जशभाई साहेब' के संबंध में जो-जो मुमुक्षु आया, उसे उन्होंने प्रभु के रस का स्वाद चखा कर प्रभु में ही जोड़ा। भक्ति और कर्म का यथार्थ समन्वय करके अनेक चैतन्यों को **'ब्रह्मज्योति'** देकर जगत में कार्य करते-घूमते जंगमतीर्थ समान कर्मयोगी साधु बनाए।

सच! **'जो प्रभु रखे और प्रभु में जोड़े, वह प्रभु का स्वरूप'...**

प.पू. साहेब ने अपने संबंध में आए चैतन्यों में ऐसा विश्वास और भक्तिभाव जगाया कि हर एक को वे अपने तो लगे और साथ ही आत्मा के अनुपम तारणहार की अनुभूति भी हुई... फलस्वरूप एक ऐसा अनूठा युवक समाज तैयार हुआ, जिसने जगत के सुख को ठुकरा कर प.पू. साहेब की निश्रा में ब्रह्मरूप होकर परब्रह्म की सेवा करने की साधना स्वीकारी।

ऐसे एक साधक द्वारा भक्तिपूर्ण हृदय से करी निम्न सेवा शायद हमें यह सोचने पर मजबूर कर देगी कि क्या हम अपने गुरु के लिए यूं याहोम होने तैयार हैं? और... **एहसास भी होगा कि प.पू. साहेब जिस क़दर आज गुरुहरि योगीजी महाराज के प्रति भक्ति अदा करने लगे हैं, उसमें ऐसे सेवकों का साथ-सहकार और समर्पण कैसा महात्म्ययुक्त रहा है।**

शुरूआत में प.पू. काकाजी ने जब प.पू. गुरुजी एवं संतों को दिल्ली भेजा, तब एक बार प.पू. साहेब की आज्ञा से पू. बॅरिस्टर सेवक के रूप में संतों के साथ दिल्ली आए थे। तत्कालीन होम मिनिस्टर एवं **प.पू. काकाजी के सखास्वरूप सत्संगी बंधु गुलज़ारीलाल नंदाजी** ने भारत साधु समाज – चाणक्यपुरी में संतों के रहने की सुविधा करवाई थी। वहाँ से थोड़ी दूर स्थित कॅवेन्टर्स डेरी से दूध लेने पू. बॅरिस्टर रोज सुबह छः बजे दिसंबर की–तब की कड़ाके की ठंड में जाया करते थे। दूसरे तो रजाई में से मुँह बाहर निकालने का हौसला भी नहीं कर पाते थे। उनके प्रति लगाव वश प.पू. गुरुजी ने एक बार उन्हें कहा कि –

तुम सुबह इतनी ठंड में जाया करते हो, उसकी बजाय 'होम डिलीवरी' करने कह दो; तुम्हें इतनी ठंड में सुबह जाना नहीं पड़ेगा।

इस बात को टालने पू. बॅरिस्टर ने कहा –

मैंने उनसे पूछा था, लेकिन उन्होंने मना करा कि वे 'होम डिलीवरी' नहीं करते।

उस दौरान सत्संग की कुछ प्रवृत्ति ही नहीं हुआ करती थी। सो, प.पू. गुरुजी व संतों भी सायं टहलने उस दूध की डेरी पर जाते कि चलो, हम भी दूध लेने साथ चलें। तब एक बार प.पू. गुरुजी को विचार आया कि डेरी के कर्मचारी को 'होम डिलीवरी' करने के लिए मश्वरा दूँ। सो, प.पू. गुरुजी काउंटर पर गए और

कर्मचारी को 'होम डिलीवरी' करने के बारे पूछा करा। तब उसने कहा कि –

हम होम डिलीवरी तो करते ही हैं।

ये बातें सुनते ही पू. बॅरिस्टर ने बता दिया कि –

यह बात सही है, परंतु 'होम डिलीवरी' के लिए प्रत्येक बोतल पर दस पैसे ज्यादा लगते हैं। मैं तो खाली ही होता हूँ और यहाँ सेवा के लिए ही तो आया हूँ, फिर खामुँखा दस पैसे फालतू क्यों देने? खुद जाकर लाऊँगा, तो मैं कहाँ घिस जाता हूँ?

प्रसंग एकदम छोटा-सा है और केवल दस पैसे का ही प्रश्न था; परंतु प.पू. साहेब जैसी खानदान विभूति की क़वायद व अद्‌भुत सेवन का यह परिचय दे जाता है।

और... प.पू. साहेब की ऐसी महिमा प.पू. गुरुजी के उद्‌गारों से कई बार सुनी है। जैसे कि –

* *प.पू. साहेब की **खानदानी** मुझे खूब जँचती है। इनके हँसने-बोलने में, बैठने-उठने में योगीबापा के 'नबीरे' की खानदानी झलकती है।*
* *उनसे **'आत्मीयता'** खूब महसूस होती है और वो भी जैसे कि शेक्सपियर ने कहा है कि – **'बी इन्टीमेट, बट नॉट चीप'** – वो साहेब में हुबहु दिखाई देता है।*
* ***'कुटुंबभाव'** की बात भी साहेब में है, तो उनसे जुड़े हरिभक्तों में भी वह दिखाई देती है।*

हाल ही में प.पू. गुरुजी २८-२९ दिसंबर'०७ को 'गुरुसभा स्वर्णजंयती' महोत्सव निमित्त ब्रह्मज्योति गए थे। प.पू. साहेब के खूब निजी एवं उनसे अत्यधिक आत्मीयता से जुड़े अमदावाद के **पू. एन.आर. दादा** को प.पू. गुरुजी केवल नाम से ही जानते थे; क्योंकि दिल्ली से ब्रह्मज्योति कुछ भेजना होता है, तो अमदावाद उन्हें भेजते हैं और उनके द्वारा ब्रह्मज्योति पहुँच जाता है। २९ तारीख को प.पू. गुरुजी ब्रह्मज्योति से अमदावाद जाने निकल रहे थे कि रास्ते में पू. एन.आर. दादा मिले। उन्होंने प.पू. गुरुजी को पूछा कि-आप जा रहे हो? प.पू. गुरुजी ने कहा – हाँ, अमदावाद जा रहे हैं और एक दिन वहीं रुकूँगा। तुरंत ही पू. एन.आर. दादा ने अपनी जेब में हाथ डाला और पूछा कि घर की चाबी दूँ? हम सब तो यहीं हैं, सो – घर खाली ही है। उनके इस जेस्चर में ऐसी निराली आत्मीयता का भाव था कि मानो अपने परिवार का ही कोई जा रहा हो। सच, **ऐसा जो कुटुंबभाव प.पू. साहेब ने हरिभक्तों में उगाया है, वो प.पू. साहेब का सर्जन बेमिसाल कहा जाए।**

यूं, प.पू. साहेब केवल युवक समाज के ही नहीं, बल्कि अनेक गृहस्थ परिवारों के भी प्राण समान हैं। गुरुसभा स्वर्ण जयंती महोत्सव में भिन्न-भिन्न जगहों से आए मुक्तों ने जो बातें करीं, अपने दिल के उद्‌गार कहे-प्रार्थना करी... वो सुन कर प.पू. साहेब की महिमा का और अधिक एहसास हुआ है कि आज प.पू. साहेब सब के व्यवहार में ही ओतप्रोत नहीं हुए, बल्कि इन सबकी आध्यात्मिक प्रगति कराने उन्होंने खूब परिश्रम किया है और उन सब के जीवन में अनुपम स्थान लिया है।

प.पू. साहेब हमेशा कहते हैं कि हमारा एक मूलभूत कायदा है :–

- दूसरों की झंझट, खटपट, बराबरी इत्यादि करे बिना,
- केवल पॉझीटीव थिंकिंग रखते हुए,
- हर एक में से जो अच्छा हो वह लेकर,
- यह सेवा मेरे हिस्से कहाँ से ?

– यूं गरज रख कर हम सेवा कर ही लिया करें।

सभी स्वरूपों की वाणी में यही बात आती है कि दिल की सच्चाई से करी प्रार्थना प्रभु सुनते हैं। तो, प्रेमावतार प.पू. साहेब – जिनके प्रेम में आज समग्र समाज शांति का एहसास करता है और अलौकिक आनंद की तृप्ति नहीं बल्कि परितृप्ति पाता है, उनके प्राकट्योत्सव पर इस सत्संग में कुटुंबभाव से ओत-प्रोत होकर हम सच्ची साधुता प्राप्त करने अंतर से प्रार्थना करें...

❑

अप्रैल मास की १४ तारीख, रामनवमी – श्रीजी महाराज का अवतरण दिन!

गीता में भगवान श्रीकृष्ण का वचन है कि भारतवर्ष में वे मानवरूप में हमेशा प्रगट होते रहेंगे। चैतन्य के विकास हेतु भगवान नई सूझ और नए साधन देते ही रहे हैं; जिससे कि प्राणीमात्र प्रगति के पथ पर अग्रसर रहे। मनुष्य का अज्ञान और वहम अदृश्य होते जा रहे हैं और... युग बदलते जाते हैं। पहले धनुष, गदा और चक्र जैसे शस्त्र द्वारा संहार करके अवतार पुरुष धर्म की रक्षा करते थे। शस्त्रों की बजाय हृदय परिवर्तन की करामात श्रीजी महाराज की– भगवान स्वामिनारायण की रही और... संयोगवश रामनौमी ही हरिनौमी रही! यानि – परब्रह्म तत्त्व का–पुरुषोत्तमनारायण का धरातल पर भगवान स्वामिनारायण के रूप में इसी दिन प्रगटीकरण हुआ।

जीव आत्यंतिक कल्याण के मार्ग को पाकर प्रगट प्रभु की मूर्ति सिद्ध करके सुखी हो... यही एकमात्र हेतु से मानवस्वरूप में वे प्रगट हुए। इससे भी अधिक, अपने आश्रितों के लिए गुणातीतभाव को पाए संतों द्वारा यह उदात्त कल्याण योजना पृथ्वी पर अखंडित रख दी...

स्वामिनारायण संप्रदाय के हम सभी अनुयायी हैं और सत्संग के ज्योतिर्धरों एवं इनसे संबंधित घटनाओं, ऐतिहासिक स्थलों और पारिभाषिक शब्दों से हम सामान्य रूप से परिचित हैं; परंतु वह परिचय केवल नाममात्र ही होता है।

तो आइए, श्रीजी महाराज की जयंती निमित्त संक्षिप्त रूप में ही उनके जन्म व कर्म की विभावना को जानें और उनके प्रागट्य की गहनता को समझकर ऐसे प्रगट प्रभु को प्रत्यक्ष करने तत्पर हों...

❖ भगवान स्वामिनारायण का जन्म समय –
संवत् १८३७ की चैत्र शुक्ला नौमी, सोमवार रात्रि को दस बज कर दस मिनिट, दिनाँक ३ अप्रैल १७८१।

❖ जन्म स्थल –
उत्तर प्रदेश के अयोध्या की निकट ,'छपिया' गाँव में।

❖ विविध नाम और नाम देने वाले –
'हरि, कृष्ण, हरिकृष्ण, घनश्याम, नीलकंठ' नाम श्री मार्कंडेय मुनि ने दिया था।
'सरजुदास' नाम मुक्तानंदस्वामी ने दिया था।
'सहजानंदस्वामी व नारायणमुनि'
कह कर रामानंदस्वामी ने संबोधित किया था।
'न्यालकरण' नाम से आंबा सेठ ने पुकारा।
महाराज ने स्वयं 'स्वामिनारायण' के नाम से अपना भजन करवाया
और
वचनामृत में 'श्रीजी महाराज' के नाम से प्रगट रहे।

❖ माता और पिता–
प्रेमवती – भक्तिमाता, हरिप्रसाद पांडे – धर्मदेव।

**❖ गृहत्याग का दिन
और
उस समय की उनकी आयु** –
संवत् १८४९ की आषाढ़ शुक्ला दशमी, शुक्रवार तड़के ब्रह्ममुहूर्त में; ग्यारह वर्ष-तीन माह और एक दिन की आयु में।

❖ नीलकंठवर्णी के रूप में किया विचरण का समय और लोज गाँव में आगमन –
सात वर्ष, तीन माह और ग्यारह दिन वन विचरण किया और संवत् १८५६ के श्रावण कृष्ण षष्ठी की तड़के 'लोज' गाँव में नीलकंठवर्णी का मंगल आगमन हुआ।

❖ सरजुदास से बने सहजानंद –
संवत् १८५७ की कार्तिक शुक्ला (प्रबोधिनी) एकादशी के दिन सद्. रामानंदस्वामी ने 'पीपलाणा' गाँव में सरजुदास को भागवती दीक्षा देकर 'नारायणमुनि' और 'सहजानंदस्वामी' नाम दिया।

❖ धर्म की बागडोर संभाली –
संवत् १८५८ की कार्तिक शुक्ला (प्रबोधिनी) एकादशी के दिन 'जेतपुर' गाँव में उन्नड खाचर के दरबार में गुरु रामानंदस्वामी ने महाराज को अपनी गद्दी पर

बिठा कर धर्म की बागडोर सौंपी।

❖ **पाँच सौ 'परमहंस' बनाए –**

स्वामिनारायण के साधु-सत्संगी संयमी एवं धर्म के नियम में रहते थे। तत्कालीन बैरागी बाबा गांजा, अफीम का सेवन करते, रामकी रखते और विनय, विवेक, मर्यादा से उनका कोई सरोकार नहीं था। समाज तो अच्छाई-बुराई परख लेता है। सो, समाज में उनका तेजोवध होता वे सहन नहीं कर पाए और स्वामिनारायण के संतों के प्रति वे बदसलूकी से बरतने लगे। दिन-प्रतिदिन उनका जुल्म बढ़ता गया। संतों ने तो इनका अत्याचार खूब सह लिया, पर साधुओं पर लगातार हो रहा ऐसा असहनीय कष्ट महाराज से बर्दाश्त नहीं हुआ।

महाराज 'कालवाणी' गाँव में थे। सभी साधुओं को महाराज ने वहाँ बुला लिया और... एक ही रात में इन पाँच सौ साधुओं को इन्होंने 'परमहंस' की दीक्षा दे दी। महाराज के सभी साधु यूं तो वैष्णवी साधु थे। सभी ने भागवती दीक्षा ली हुई थी। इनके नियम थे-मर्यादा थी। महाराज ने इनकी पूरी भूमिका ही बदल डाली। 'परमहंस' यानि – नात-जात एवं वर्णाश्रम धर्म से परे रहना। उन्हें चोटी नहीं, कंठी नहीं, जनोई नहीं, कपाल में तिलक नहीं; धर्म का-संप्रदाय का कोई आधार लिए बिना, अल्फी पहन कर सिर्फ आत्मारूप रह कर ही जीना। सांप्रदायिक प्रतीक के अभाव के कारण अब विरोधी इन्हें पहचान नहीं सकते थे; पर यह कोई आसान खेल नहीं था।

महाराज के साधुओं में कई तो बड़े थे एवं हर एक वर्ण के थे। 'परमहंस' होते ही वे सभी एक वर्ण के हो गए! वर्णाश्रम का भेद खत्म कर दिया। ***सिर्फ तेईस साल की छोटी उम्र के महाराज के एक कहने पर इन बड़ों-बड़ों का एक ही रात में अपने आप में यूं पूरा बदलाव ला देना-यह एक चमत्कार ही कहा जाए।***

महाराज द्वारा उठाया यह कदम विश्व के धर्मों के इतिहास में बेजोड़ व क्रांतिकारी था। इस कदम से इन्होंने सत्संग में एक अभिनव व अद्भुत शक्ति पैदा कर दी... सत्संग को नई दिशा मिली और इस एक झटके से सत्संग ने विराट स्वरूप पकड़ लिया।

❖ **भगवान स्वामिनारायण के वरदान –**

भगवान स्वामिनारायण ने अत्यंत प्रेम, कृपा व करुणा से समग्र मानवजाति पर निम्न वरदानों की खुले हाथ वृष्टि करी है और **ब्रह्मस्वरूप संतों एवं जीवनमुक्तों द्वारा ये वरदान अखंडित चालू रहे हैं।**

✻ **उनके शिष्यों एवं अनुयायीओं को रोटी, कपड़ा और छत जैसी जीवन निर्वाह की बुनियादी जरूरतों की परिपूर्ति करने का उन्होंने वादा किया। अपना अवतार कार्य शुरु करने से पूर्व उन्होंने सद्गुरु रामानंदस्वामी से मांग लिया कि –**

'आपके सत्संगी को यदि एक बिच्छु के काटने का दुःख हो, तो मेरे एक-एक रोम में कोटि-कोटि बिच्छु के काटने का दुःख हो; लेकिन आपके सत्संगी को वह ना हो और

आपके सत्संगी के प्रारब्ध में रामपत्तर (भीख माँगना) लिखा हो, तो वह रामपत्तर मुझे मिले, लेकिन आपका सत्संगी अन्न-वस्त्र के अभाव से दुःखी ना रहे।' *(वच. ग.प्र.७०)*

मानवसंस्कृति के इतिहास में किसी भी अवतारी पुरुष ने अपने आश्रितों की इतनी हद तक चिंता करी हो, ऐसा दिखाई नहीं देता।

अपने भक्तों की परवरिश के लिए ही वे तीस साल तक गुजरात में लगातार घूमते रहे; एक जगह चैन से बैठे नहीं। ***यूं करके इन्होंने अपना जुत्थ बढ़ाने का प्रयास नहीं किया था, वरन् अपने आश्रितों का विश्वास-निष्ठा 'दृढ़' जरूर कराई।*** प्रकरण ३ की ९वीं 'स्वामी की बात' में इसी का स्पष्ट जिक्र है।

✻ **हर एक भक्त को उसके अंत समय पर दर्शन देकर उसकी आत्मा को अपने सनातन दिव्य 'अक्षरधाम' में ले जाने का उन्होंने निम्न प्रकार से कॉल दिया है –**

'इन संत सहित हम जीवों के कल्याण के लिए

प्रगट हुए हैं। सो, आप यदि मेरा कहना मानोगे, तो जिस धाम से मैं आया हूँ, वहाँ आप सबको ले जाऊँगा और आप भी मानना कि हमारा कल्याण हो चुका है।' (वच.जेतलपुर ५)

यूं, भगवान स्वामिनारायण ने उनके परमधाम की सिर्फ बात ही नहीं करी है, बल्कि वहाँ ले जाने वे स्वयं आएंगे, ऐसा वचन दिया है। इन्होंने यह 'कह दिया' ऐसा नहीं है, अंतकाल पर कई भक्तों को ये अनुभव भी हो चुके हैं।

'अंतकाल पर मैं आपको लेने आऊँगा' – यह कह कर तो इन्होंने अपने आश्रित को निर्भीक कर दिया। श्री नानुभाई दवे के शब्दों में –

इसे 'मार्ग' कैसे कहा जाए? इसे तो 'लिफ्ट' ही कहा जाए!

* **प्रत्यक्ष ब्रह्मस्वरूप संत या गुणातीत सत्पुरुष या विदेही जीवनमुक्तों द्वारा मानवस्वरूप में धरती पर अखंड प्रगट रहने का निम्न प्रकार सर्वश्रेष्ठ वरदान दिया है –**

  '...हमारा स्वरूप जो अक्षरब्रह्म - उसके द्वारा माया का कपट दूर करके, इस पृथ्वी का तल रहेगा तब तक अनंत जीवों का आत्यंतिक कल्याण करने के लिए परंपरा से आत्यंतिक ज्ञान के दाता और अक्षरब्रह्म के साधर्म्य को पाए हुए परम एकांतिक सत्पुरुष रखूँगा...'

  (स्वा.वा.प्र.८ की १२)

* **मोक्ष और आत्मसाक्षात्कार के लिए किसी भी प्रकार की कड़ी शिस्त, व्यायाम, कठिन साधना, तपस्या या अन्य विधियों पर जोर ना देकर उन्होंने तीव्र अभीप्सा, शरणागति, सच्चे दिल से करी प्रार्थना और प्रभु एवं संतों के प्रति की प्रीति को ही प्राधान्य देते हुए वच. ग. अंत्य. ११ में कहा है कि –**

  'जैसी अपनी देह के प्रति आत्मबुद्धि और दृढ़ प्रीति रहती है, वैसी भगवान एवं भगवान के भक्त के प्रति आत्मबुद्धि और दृढ़ प्रीति रहे तो निर्विकल्प समाधि में जैसी शांति रहती है, वैसी शांति समाधि के बिना भी हमेशा बनी रहती है...'

  कठिन से कठिन साधना-तपस्या से भी जो सिद्ध नहीं हो सकता, उससे भी अधिक फल – **'प्रगट की धाम, धामी और मुक्त की निष्ठा'** के दृढ़ाव में इन्होंने दिया है और... ऐसी सरलता कर देने के बावजूद इन्होंने धर्म का मूल्य भी नीचा नहीं किया है।

  इसी हेतु, समग्र मानवजाति को इन्होंने **'शिक्षापत्री'** रूप आचारसंहिता दी है; जिसका अमल करने पर नात-जात, रंग, ऊँच-नीच या प्रादेशिक भेदभाव के बिना कोई भी व्यक्ति हर प्रकार से सुरक्षित एवं सुखी रह सकता है।

* **इससे भी अधिक, श्रीजी महाराज ने अपने भक्तों के लिए संपूर्ण आर्थिक सलामती, सामाजिक न्याय, उमदा चारित्र्य और आत्यंतिक कल्याण प्रदान करते हुए वच. जेतलपुर-५ में कहा है –**

  '...मेरा दृढ़ विश्वास रखोगे और मेरे कहे मुताबिक करोगे, तो यदि कोई महाकष्ट आ पड़े या सात अकाल भी आ जाएं या उबरने का कोई चारा ना हो – ऐसे कष्ट से भी रक्षा करूँगा... यदि हमारे सत्संग के धर्म भली भाँति पालोगे और सत्संग रखोगे तो।

  यदि (सत्संग) नहीं रखो और (प्रारब्धवश) महादुःख को पाओ, उसमें फिर हमारा कोई लेना-देना नहीं है।'

❖ 'स्वामिनारायण' मंत्र का उच्चारण –

गुरु रामानंदस्वामी के अक्षरवास की द्वादशी-त्रयोदशी विधि के पश्चात् 'फणेणी' गाँव में चतुर्दशी के दिन ही, यानि – मार्गशीर्ष की कृष्णा द्वादशी के दिन श्रीजी महाराज ने स्वयं 'स्वामिनारायण' नाम का अपना जीवंत दिव्य विग्रह मंत्र सभी को दिया; जो कि – मनुष्य की यातनाओं, जीवन की समस्याओं, संघर्षों और संसारी दुःखों का निवारण करता है।

'ध्यान मेरा धरो, स्मरण मेरा करो, कीर्तन मेरे

गाओ, दर्शन मेरा करो, पूजा-आराधना मेरी करो' – 'प्रत्यक्ष के ऐसे पंचम पुरुषार्थ' को सत्संग की विशिष्टता कहा जाए।

प्रत्यक्ष सत्पुरुष या एकांतिक जीवनमुक्त की आज्ञा एवं मार्गदर्शन में इस मंत्र का जाप और प्रार्थना करने से किसी भी प्रकार की कठिन शिस्त, तपस्या या साधना के बिना सरलता से निर्विकल्प समाधि की अवस्था में प्रवेश मिलता है।

'स्वामिनारायण' नाम की महिमा समझाते हुए श्रीजी महाराज ने वच. लोया ६ में स्वयं कहा है कि –

'...जब ऐसे बुरे विचार उठने लगें, तब ध्यान को छोड़ कर जीभ से उच्च स्वर में निर्लज्ज होकर, ताली बजा कर 'स्वामिनारायण-स्वामिनारायण' भजन करना और 'हे दीनबंधो! हे दयासिंधो!' यूँ भगवान को प्रार्थना करना तथा मुक्तानंदस्वामी जैसे भगवान के बड़े संत हों, उनका नाम लेकर उन्हें प्रार्थना करनी। तो सभी बुरे संकल्प टल जाएंगे और चैन मिलेगा... इसके सिवा बुरे संकल्प टालने का और कोई उपाय नहीं है।'

मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी ने भी अपनी बात में कहा है कि–

'स्वामिनारायण' नाम जैसा और कोई मंत्र आज बलवान नहीं है। इस मंत्र से काले नाग का भी ज़हर चढ़ता नहीं और इस मंत्र से पंचविषय उड़ जाते हैं। जीव ब्रह्मरूप होता है और काल, कर्म, माया का बंधन छूट जाता है। ऐसा बहुत बलवान यह मंत्र है। सो, निरंतर भजन करना।'

(प्र. १-१५४)

❖ मूळजीभक्त को भागवती दीक्षा अर्पण –

संवत् १८६६ की पोषी पूर्णिमा के शुभ दिन अमदावाद के पास 'डभाण' गाँव में श्रीजी महाराज ने महायज्ञ करके सौराष्ट्र के 'भादरा' गाँव के मूळजी शर्मा को वेदोक्त विधिपूर्वक भागवती दीक्षा देते वक्त उनका नामकरण करते हुए कहा –

'ये हमारे उत्तम भक्त... तीन गुण से परे हैं, इसलिए इनका नाम 'गुणातीतानंद' रख रहे हैं।'

'श्री हरिलीलाकल्पतरु' ग्रंथ में इस प्रसंग का वर्णन करते हुए महाराज ने स्वयं कहा है –

'ये मूलजी शर्मा हमारा मूर्तिमान अक्षरधाम है। उन्हें दीक्षा देते हुए मुझे खूब ही आनंद हो रहा है। जहां हम हमारे अनंत मुक्तों के साथ निवास करके रहते हैं; वह हमारा धाम यह अक्षरब्रह्म है।'

अक्षरधाम के स्वरूप को यूँ धरती पर लाकर उन्होंने सभी मुक्तों पर यह एक अनुग्रह ही किया है; क्योंकि **मानव जीवन के अंतिम ध्येय का सदा स्मरण रहने से उपासना भी दृढ़ हुई है और साथ-साथ एक शुद्ध गुरु परंपरा भी रच दी है।** ज्योत से ज्योत जलती रही है – पूर्णता से पूर्णत्व प्रगट रहा है!

❖ तिलक और चांदले की शुरुआत –

महाराज ने 'पंचाळा' गाँव में मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी के माथे पर तिलक और चांदला करके सभी को बताते हुए कहा था कि –

'यह हमारा तिलक और यह हमारा चांदला; इनके जैसा कोई साधु नहीं और हमारे जैसा कोई भगवान नहीं है।'

यूं कह कर तिलक चांदला करवाने की शुरुआत भी करी थी।

❖ स्वधामगमन –

४९ वर्ष, २ माह-१ दिन धरती पर रहकर संवत् १८८६ ज्येष्ठ शुक्ल दशमी के दिन मंगलवार (७.६.१८३०) को मध्याह्न के समय 'गढड़ा' में दादाखाचर के दरबार में, अपने निवासस्थान 'अक्षर ओरडी' में चौकी पर स्वस्तिक आसन से ध्यान में निमग्न होकर स्वतंत्र रूप से महाराज स्वधाम पधारे। परंतु देहत्याग से पूर्व उन्होंने सभी संतों एवं हरिभक्तों को कहा था–

'देखो, ये गुणातीतानंदस्वामी हमारे रहने का अक्षरधाम हैं। वे हमारे उत्तराधिकारी-वारिसदार हैं। उनकी आज्ञा में रहना, आपका कल्याण होगा।'

यूं, संत द्वारा वे धरती पर सदैव प्रगट रहेंगे, ऐसे अभय वरदान से सभी आश्रितों को हमेशा के लिए सनाथ किया है। ❑

प्रगट ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामिजी के आत्मीय अमृत महोत्सव का शंखनाद...

'भगवान स्वामिनारायण का धाम गुणातीत है और सभी को गुणातीत करना है।'

यह बात पकड़ कर गुरुहरि योगीजी महाराज ने मानों बेहद प्रसन्न होकर श्रीहरि के प्रसादरूप **प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी** की अनमोल भेंट हमें दी... ऐसे परम भागवत संत का महामंगलकारी प्रागट्य दिन हम **४ मई** को मनाते रहे हैं...

- गुरुहरि योगीजी महाराज के साथ जब से जुड़े, तब से जिन्होंने बापा की मर्जी और वचन में ही जीवन जीने का ध्येय बना दिया।
- निरंतर परब्रह्म की प्रगट मूर्ति को धार कर पल-पल जीते हुए जिन्होंने अपने संबंध में आए हुए के जीवन में प्रभु बसा दिए।
- जिनके दर्शन, सेवा, समागम से मुमुक्षु माया से पर तो होते ही हैं, साथ ही जगत फीका करके अखंड प्रभुमय जीवन जीने जो अग्रसर करते हैं।
- जिनकी हर क्रिया दिव्य और कल्याणकारी-हेतुलक्षी नहीं, बल्कि चैतन्यलक्षी ही है – संबंध में आई हर चेतना के श्रेय के लिए ही है।
- जो प्रभुभक्ति और गुरु – 'योगी' के प्रति की भक्ति में ही दिन-रात निमग्न हैं।

ऐसी दिव्य और कल्याणकारी विभूति को कोटि-कोटि नमन!

ऐसे भगवतस्वरूप संत का प्राकट्य दिन हम किस प्रकार मना सकते हैं? क्योंकि हम उनके जितने गुण जानते हैं-गाते हैं, उससे तो वे अनंत गुना ही हैं और जितने भक्त उतने ही उनके स्वरूप होने से किन शब्दों में वर्णन कर सकेंगे? हर एक भक्त अपने अनुभव के मुताबिक जो-जो वे कहेंगे वही सत्य और तब भी प.पू. स्वामिजी तो पर के पर ही हैं।

अब तक हम प.पू. काकाजी के कहे मुताबिक **४ मई** को अपनी भक्ति अदा करने प.पू. स्वामिजी की जयंती मनाया करते थे। परंतु, मई के महीने में तो खूब गर्मी हो जाती है; सो, सत्पुरुष हमें जो देना चाहते हैं वह, सभी मुक्त मानसिक एवं स्थूल रूप से स्वस्थ माहौल में अंतर में धार पाएं, इसी भावना से अब वर्ष के पहले ही मास यानि – जनवरी में ही प.पू. स्वामिजी का प्राकट्य पर्व मनाने की शुरुआत करी है। सो, अब की बार **२७ जनवरी** को अमदावाद में प.पू. स्वामिजी के 'आत्मीय अमृत पर्व' का चौथा चरण मनाया गया और तब 'अमृतपर्व' सच्चे अर्थ में किसे मनाया कहा जाए और वे हम से क्या चाहना रखते हैं, वह प.पू. स्वामिजी ने स्वयं ही कृपा करके बता दिया...

तो आइए, नए वर्ष में प.पू. स्वामिजी जैसे अखंड प्रभुधारक संत को मन-बुद्धि की भूमिका से परे जाकर पहचानने के लिए उनके द्वारा की गई आशिष वर्षा के मुद्दों को पढ़ें, विचारें, घोटें और जीवन में साकार करने उनसे बल मांगें और पूरे वर्ष उसी को लेकर जीने की आदत डाल दें...

- ...यहाँ से एक संकल्प करके जाना कि अगले वर्ष वडोदरा की धरती पर जब आत्मीय अमृत महोत्सव मनाया जाए, तब तक **'संप, सुहृद्‌भाव, एकता'** का एक जो सनातन अद्‌भुत सूत्र बापा ने हम सभी को दिया है; उसमें एक वर्ष दौरान किसी जगह हम चूक ना जाएं – असफल ना हो जाएं। आत्मीयता रखने में – मन से भी यदि हम असफल हो जाएं, तो महाराज को याद करके-बापा को याद करके रात को दस-पंद्रह मिनिट भजन-प्रार्थना करके ही सोना।

  'तुलसी जाके मुखन से भूले निकसे राम, ताकी पग की पैहनियाँ मेरे तन की चाम' – तुलसीदासजी ने महिमा की यह कितनी अद्‌भुत बात करी है?

❊ …कई प्रकार के रोग हैं, जो हमें पता हैं। पर, जीव का सबसे खतरनाक रोग है – 'जन्म और मरण…' सत्संग का मुख्य हेतू यह है कि – हर एक आत्मा को जन्म-मरण के चक्कर से – गर्भवास के भयंकर रोग से मुक्त कराना और दूसरा हेतु यह है कि हमारा देह और घर मंदिर बने।

❊ …वचनामृत प्रथम १६ और १८ के मुताबिक **स्वधर्म** रखना,
वचनामृत प्रथम २७ और ३७ के मुताबिक **निष्ठा** रखनी,
मध्य २८ और ४१ के मुताबिक **सेवा** करनी,
अंत्य. के ७ और ११ के मुताबिक **आत्मबुद्धि और प्रीति** से जीने का दृढ़ संकल्प करना।

❊ …आँख, कान, जीभ से जब हम असफल हों, तब रोज रात को दस-पंद्रह मिनिट भजन-प्रार्थना करके फिर सोने जाना।
जिसकी पाँच इंद्रियाँ पवित्र-प्रभुमय हों उसकी ही आत्मा धन्य, विवेकी और सुखी होगी… भूल से किसी के प्रति अरूचि-अभाव आ जाए, उस दिन भी रात को भजन-प्रार्थना करके सो जाना… एक सेवक के तौर पर, प्रभु के एक लड़के के तौर पर हमें निरंतर एक कदम प्रभु के लिए भरना है। हर रोज अपनी आत्मा की यात्रा प्रभु की तरफ चलती होनी ही चाहिए।

❊ …संसार में प्रसंग बनने वाले ही हैं। परिवार में प्रसंग बनने वाले ही हैं। सास - बहू के प्रसंग बनने वाले ही हैं। छोटे भाई और बड़े भाई के बीच प्रसंग बनने वाले ही हैं। मंदिर में हम साथ-साथ इकट्ठे रहते हैं; प्रसंग बनने वाले ही हैं। पर ऐसे प्रसंग पर प्रगट प्रभु को कर्ता-हर्ता मानकर भगवद्भाव से एक-दूसरे का अगर हम स्वीकार करते हो जाएंगे, तो अपनी आत्मा समृद्ध और सुखी हो जाएगी…

❊ …हे बापा! हम आपके साथ रहे। आप हजारों हरिभक्तों के साथ रहे;
१. आपने उनका-हमारा स्वीकार करा,
२. सबकी भगवान के भाव से सेवा करी,
३. दास का दास होकर वर्ते,
४. सब की चरणधूली बनकर वर्ते
और
५. अगर हम गल्ती से भावफेर में जाते, तो आपने हमारी रक्षा करी ।
तो हे बापा! हमें ऐसा बल, बुद्धि और ज्ञान देना कि निर्दोषबुद्धि और सुहृद्भाव की बात आपने जिस सरलता से साधकों के लिए समाज में बहती रख दी है, उसी मार्ग पर हम सहजता से चल सकें।

❊ …अगले साल जब उत्सव करें तब आत्मीयता का आनंद हृदय में अनुभव करना है। महिमा का आनंद हृदय में अनुभव करना है। जब भी इन्द्रियाँ - वृत्ति विचलित हो जाए, भावफेर हो जाए तो सहज हम भजन करके – पीछे हठ करके – प्रभु प्रार्थना करके संबंध न तोड़ें और संबंध बनाते रहें… जिससे संप, सुहृद्भाव और एकता के मार्ग पर सहजता से सारा समाज जिए।

❊ …अपनी आत्मा की जो सेवा करें, ऐसे माँ जैसे – धर्म, वैराग्य, भक्तियुक्त वच. प्रथम ५४, मध्य ५४ के जैसी संत के साथ मैत्री बढ़ाएँ।

(ध्वनिमुद्रण से संकलित)

❑

Statement about ownership and other particulars about newspaper — 'भगवत् कृपा' (Form IV Rule 8)

1. Place of Publication	:	Yogi Divine Society, 'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-52
2. Periodicity of its Publication	:	Bi-Monthly
3. Printer's Name	:	Prabhaker Rao
4. Nationality	:	Indian
Address	:	'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-52
5. Publisher's Name	:	
Nationality	:	As above
Address	:	
6. Editor's Name	:	
Nationality	:	As above
Address	:	
7. Owner's Name	:	Yogi Divine Society
Nationality	:	Indian
Address	:	'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-52

I, Prabhaker Rao, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd/-
PRABHAKER RAO
Signature of Publisher

Date: 15 March, 2008

व्रतोत्सवसूची

(1) दि.	17.3.2008, सोमवार	—	एकादशी, व्रत
(2) दि.	21.3.2008, शुक्रवार	—	होली, ब्रह्मस्वरूप भगतजी महाराज का जन्मोत्सव
(3) दि.	22.3.2008, शनिवार	—	धुलेन्डी, प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. साहेब की प्रागट्य तिथि
(4) दि.	30.3.2008, रविवार	—	***प.पू. गुरुजी का 71वाँ प्रागट्योत्सव, दिल्ली में – सायं 5:00 बजे से...***
(5) दि.	2.4.2008, बुधवार	—	एकादशी, व्रत
(6) दि.	6.4.2008, रविवार	—	गुडी पड़वा
(7) दि.	14.4.2008, सोमवार	—	रामनौमी, **भगवान श्री स्वामिनारायण जयंती**, व्रत
(8) दि.	16.4.2008, बुधवार	—	एकादशी, व्रत
(9) दि.	18.4.2008, शुक्रवार	—	गुरुहरि योगीजी महाराज का दीक्षा दिन
(10) दि.	20.4.2008, रविवार	—	श्री हनुमान जयंती
(11) दि.	2.5.2008, शुक्रवार	—	एकादशी, व्रत
(12) दि.	4.5.2008, रविवार	—	**प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का प्राकट्य दिन**
(13) दि.	7.5.2008, बुधवार	—	अखात्रीज
(14) दि.	8.5.2008, गुरुवार	—	गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज की अंतर्धान तिथि
(15) दि.	15.5.2008, गुरुवार	—	एकादशी, व्रत
(16) दि.	18.5.2008, रविवार	—	नृसिंह जयंती, फलारी व्रत

R.N.I. 28971/ 77
Air Mail
'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine – Despatched on 15th of alternate months
If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :* **SHRI PRABHAKER RAO** ***FOR*** **YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI**
'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2730 1327
Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A 6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052